

हिंदी

कक्षा IX

अध्याय 6- रैदास के पद

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

(ख) पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे- पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

(ग) पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए-

(घ) दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(च) 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

(छ) निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

मोरा, चंद, बाती जोति, बरै, राती, छत्रु, धरै, छोति, तुहीं, गुसईआ

उत्तर-

(क) पहले पद में भगवान और भक्त की निम्नलिखित चीजों से तुलना की गई है-

1. भगवान की चंदन से और भक्त की पानी से।
2. भगवान की घन बन से और भक्त की मोर से।
3. भगवान की चाँद से और भक्त की चकोर से
4. भगवान की दीपक से और भक्त की बाती से
5. भगवान की मोती से और भक्त की धागे से।
6. भगवान की सुहागे से और भक्त को सोने से।

(ख) अन्य तुकांत शब्द इस प्रकार हैं

1. मोरा – चकोरा
2. बाती – राती
3. धागा – सुहागा
4. दासा – रैदासा

अध्याय 6- रैदास के पद

(ग)

1. चंदन – बास
2. घन बन – मोर
3. चंद – चकोर
4. मोती – धागा
5. सोना – सुहागा
6. स्वामी – दास

(घ) दूसरे पद में कवि ने अपने प्रभु को 'गरीब निवाजु' कहा है। इसका अर्थ है-दीन-दुखियों पर दया करने वाला। प्रभु ने रैदास जैसे अछूत माने जाने वाले प्राणी को संत की पदवी प्रदान की। रैदास जन-जन के पूज्य बने। उन्हें महान संतों जैसा सम्मान मिला। रैदास की दृष्टि में यह उनके प्रभु की दीन-दयालुता और अपार कृपा ही है।

(ङ) इसका आशय है-रैदास अछूत माने जाते थे। वे जाति से चमार थे। इसलिए लोग उनके छूने में भी दोष मानते थे। फिर भी प्रभु उन पर द्रवित हो गए। उन्होंने उन्हें महान संत बना दिया।

(च) रैदास ने अपने स्वामी को 'लाल', गरीब निवाजु, गुसईआ, गोबिंदु आदि नामों से पुकारा है।

(छ)

प्रयुक्त रूप	प्रचलित रूप
--------------	-------------

- | | |
|-----------|-------------|
| 1. मोरा | मोर |
| 2. चंद | चाँद |
| 3. बाती | बत्ती |
| 4. जोति | ज्योति |
| 5. बरै | जलै |
| 6. राती | रात्रि, रात |
| 7. छत्रु | छत्र, छाता |
| 8. धरै | धारण करे |
| 9. छोति | छूते |
| 10. तुहीं | तुम्हीं |
| 11. गुसईआ | गोसाईं। |

अध्याय 6- रैदास के पद

प्रश्न 2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जाकी अँग-अँग बास समानी

(ख) जैसे चितवत चंद चकोरा

(ग) जाकी जोति बरै दिन राती

(घ) ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

(ङ) नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उत्तर-

(क) भाव यह है कि कवि रैदास अपने प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने आराध्य प्रभु से अपना संबंध विभिन्न रूपों में जोड़कर उनके प्रति अनन्य भक्ति प्रकट करते हैं। रैदास अपने प्रभु को चंदन और खुद को पानी बताकर उनसे घनिष्ठ संबंध जोड़ते हैं। जिस तरह चंदन और पानी से बना लेप अपनी महक बिखेरता है उसी प्रकार प्रभु भक्ति और प्रभु कृपा के कारण रैदास का तन-मन सुगंध से भर उठा है जिसकी महक अंग-अंग को महसूस हो रही है।

(ख) भाव यह है कि रैदास अपने आराध्य प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। वे अपने प्रभु के दर्शन पाकर प्रसन्न होते हैं। प्रभु-दर्शन से उनकी आँखें तृप्त नहीं होती हैं। वे कहते हैं कि जिस प्रकार चकोर पक्षी चंद्रमा को निहारता रहता है। उसी प्रकार वे भी अपने आराध्य का दर्शनकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

(ग) भाव यह है कि अपने आराध्य प्रभु से अनन्यभक्ति एवं प्रेम करने वाला कवि अपने प्रभु को दीपक और खुद को उसकी बाती मानता है। जिस प्रकार दीपक और बाती प्रकाश फैलाते हैं उसी प्रकार कवि अपने मन में प्रभु भक्ति की ज्योति जलाए रखना चाहता है।

(घ) प्रभु की दयालुता, उदारता और गरीबों से विशेष प्रेम करने के विषय में कवि बताता है कि हमारे समाज में अस्पृश्यता के कारण जिन्हें कुछ लोग छूना भी पसंद नहीं करते हैं, उन पर दयालु प्रभु असीम कृपा करता है। प्रभु जैसी कृपा उन पर कोई नहीं करता है। प्रभु कृपा से अछूत समझे जाने वाले लोग भी आदर के पात्र बन जाते हैं।

(ङ) संत रैदास के प्रभु अत्यंत दयालु हैं। समाज के दीन-हीन और गरीब लोगों पर उनका प्रभु विशेष दया दृष्टि रखता है। प्रभु की दया पाकर नीच व्यक्ति भी ऊँचा बन जाता है। ऐसे व्यक्ति को समाज में किसी का डर नहीं रह जाता है। अर्थात् प्रभु की कृपा पाने के बाद नीचा समझा जाने वाला व्यक्ति भी ऊँचा और निर्भय हो जाता है।

अध्याय 6- रैदास के पद

प्रश्न 3.रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-पहले पद का केंद्रीय भाव यह है कि राम नाम की रट अब छूट नहीं सकती। रैदास ने राम नाम को अपने अंग-अंग में समा लिया है। वह उनका अनन्य भक्त बन चुका है।

दूसरे पद का केंद्रीय भाव यह है कि प्रभु दीन दयालु हैं, कृपालु हैं, सर्वसमर्थ हैं तथा निडर हैं। वे अपनी कृपा से नीच को उच्च बना सकते हैं। वे उद्धारकर्ता हैं।

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1.भक्त कवि कबीर, गुरु नानक, नामदेव और मीराबाई की रचनाओं का संकलन कीजिए।

उत्तर-छात्र इन कवियों की रचनाओं का संकलन स्वयं करें।

प्रश्न 2.पाठ में आए दोनों पदों को याद कीजिए और कक्षा में गाकर सुनाइए।

उत्तर-छात्र दोनों पदों को स्वयं याद करें और कक्षा में गाकर सुनाएँ।

अन्य पाठेतर हल प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1.रैदास को किसके नाम की रट लगी है? वह उस आदत को क्यों नहीं छोड़ पा रहे हैं?

उत्तर-रैदास को राम के नाम की रट लगी है। वह इस आदत को इसलिए नहीं छोड़ पा रहे हैं, क्योंकि वे अपने आराध्य प्रभु के साथ मिलकर उसी तरह एकाकार हो गए हैं; जैसे-चंदन और पानी मिलकर एक-दूसरे के पूरक हो जाते हैं।

प्रश्न 2. जाकी अंग-अंग वास समानी' में जाकी' किसके लिए प्रयुक्त है? इससे कवि को क्या अभिप्राय है?

उत्तर- 'जाकी अंग-अंग वास समानी' में 'जाकी' शब्द चंदन के लिए प्रयुक्त है। इससे कवि का अभिप्राय है जिस प्रकार चंदन में पानी मिलाने पर इसकी महक फैल जाती है, उसी प्रकार प्रभु की भक्ति का आनंद कवि के अंग-अंग में समाया हुआ है।

प्रश्न 3. 'तुम घन बन हम मोरा'-ऐसी कवि ने क्यों कहा है?

उत्तर- रैदास अपने प्रभु के अनन्य भक्त हैं, जिन्हें अपने आराध्य को देखने से असीम खुशी मिलती है। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि जिस प्रकार वन में रहने वाला मोर आसमान में घिरे बादलों को देख प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार कवि भी अपने आराध्य को देखकर प्रसन्न होता है।

प्रश्न 4. 'जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने क्या कहना चाहा है?

उत्तर- 'जैसे चितवत चंद चकोरा' के माध्यम से रैदास ने यह कहना चाहा है कि जिस प्रकार रात भर चाँद को देखने के बाद भी चकोर के नेत्र अतृप्त रह जाते हैं, उसी प्रकार कवि रैदास के नैन भी निरंतर प्रभु को देखने के बाद भी प्यासे रह जाते हैं।

प्रश्न 5. रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' को प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर- रैदास द्वारा रचित 'अब कैसे छूटे राम नाम रट लागी' में अपने आराध्य के नाम की रट की आदत न छोड़ पाने के माध्यम से कवि ने अपनी अटूट एवं अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है। इसके अलावा उसने चंदन-पानी, दीपक-बाती आदि अनेक उदाहरणों द्वारा उनका सान्निध्य पाने तथा अपने स्वामी के प्रति दास्य भक्ति की स्वीकारोक्ति की है।

प्रश्न 6. रैदास ने अपने 'लाल' की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- रैदास ने अपने 'लाल' की विशेषता बताते हुए उन्हें गरीब नवाजु दीन-दयालु और गरीबों का उद्धारक बताया है। कवि के लाल नीची जातिवालों पर कृपाकर उन्हें ऊँचा स्थान देते हैं तथा अछूत समझे जाने वालों का उद्धार करते हैं।

प्रश्न 7. कवि रैदास ने किन-किन संतों का उल्लेख अपने काव्य में किया है और क्यों?

उत्तर-कवि रैदास ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैन का उल्लेख अपने काव्य में किया है। इसके उल्लेख के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि उसके प्रभु गरीबों के उद्धारक हैं। उन्होंने गरीबों और कमजोर लोगों पर कृपा करके समाज में ऊँचा स्थान दिलाया है।

प्रश्न 8. कवि ने गरीब निवाजु किसे कहा है और क्यों ?

उत्तर-कवि ने गरीब निवाजु अपने आराध्य प्रभु को कहा है, क्योंकि उन्होंने गरीबों और कमजोर समझे जानेवाले और अछूत कहलाने वालों का उद्धार किया है। इससे इन लोगों को समाज में मान-सम्मान और ऊँचा स्थान मिल सकी है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पठित पद के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि रैदास की उनके प्रभु के साथ अटूट संबंध हैं।

उत्तर-पठित पद से ज्ञात होता है कि रैदास को अपने प्रभु के नाम की रट लग गई है जो अब छुट नहीं सकती है। इसके अलावा कवि ने अपने प्रभु को चंदन, बादल, चाँद, मोती और सोने के समान बताते हुए स्वयं को पानी, मोर, चकोर धाग और सुहागे के समान बताया है। इन रूपों में वह अपने प्रभु के साथ एकाकार हो गया है। इसके साथ कवि रैदास अपने प्रभु को स्वामी मानकर उनकी भक्ति करते हैं। इस तरह उनका अपने प्रभु के साथ अटूट संबंध है।

प्रश्न 2. कवि रैदास ने 'हरिजीउ' किसे कहा है? काव्यांश के आधार पर 'हरिजीउ' की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-कवि रैदास ने 'हरिजीउ' कहकर अपने आराध्य प्रभु को संबोधित किया है। कवि का मानना है कि उनके हरिजीउ के बिना माज के कमजोर समझे जाने को कृपा, स्नेह और प्यार कर ही नहीं सकता है। ऐसी कृपा करने वाला कोई और नहीं हो सकता। समाज के अछूत समझे जाने वाले, नीच कहलाने वालों को ऊँचा स्थान और मान-सम्मान दिलाने का काम कवि के 'हरिजीउ' ही कर सकते हैं। उसके 'हरिजीउ' की कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं।

प्रश्न 3.रैदास द्वारा रचित दूसरे पद 'ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै' को प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर-कवि रैदास द्वारा रचित इस पद्य में उनके आराध्य की दयालुता और दीन-दुखियों के प्रति विशेष प्रेम का वर्णन है। कवि का प्रभु गरीबों से जैसा प्रेम करता है, वैसा कोई और नहीं। वह गरीबों के माथे पर राजाओं-सा छत्र धराता है तो अछूत समझे जाने वाले वर्ग पर भी कृपा करता है। वह नीच समझे जाने वालों पर कृपा कर ऊँचा बनाता है। उसने अनेक गरीबों का उद्धार कर यह दर्शा दिया है कि उसकी कृपा से सभी कार्य सफल हो जाते हैं।

रैदास के पद पाठ व्याख्या

पद – 1

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥

शब्दार्थ –

बास – गंध, वास

समानी – समाना (सुगंध का बस जाना), बसा हुआ (समाहित)

घन – बादल

मोरा – मोर, मयूर

चितवत – देखना, निरखना

चकोर – तीतर की जाति का एक पक्षी जो चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है

बाती – बत्ती, रुई, जिसे तेल में डालकर दिया जलाते हैं

जोति – ज्योति, देवता के प्रीत्यर्थ जलाया जाने वाला दीपक

बरै – बढ़ाना, जलना

राती – रात्रि

सुहागा – सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य

दासा – दास, सेवक

व्याख्या – इस पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर

अध्याय 6- रैदास के पद

चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम चंदन हो तो तुम्हारा भक्त पानी है। कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु!

यदि तुम बादल हो तो तुम्हारा भक्त किसी मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम चाँद हो तो तुम्हारा भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।

कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम दीपक हो तो तुम्हारा भक्त उसकी बत्ती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु! यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं।

उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात् उसकी सुंदरता और भी निखर जाती है। कवि रैदास अपने आराध्य के प्रति अपनी भक्ति को दर्शाते हुए कहते हैं कि हे मेरे प्रभु! यदि तुम स्वामी हो तो मैं आपका भक्त आपका दास यानि नौकर हूँ।

पद – 2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।

गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।

नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

शब्दार्थ

लाल – स्वामी

कउनु – कौन

गरीब निवाजु – दीन-दुखियों पर दया करने वाला

गुसईआ – स्वामी, गुसाई

माथै छत्रु धरै – मस्तक पर मुकुट धारण करने वाला

छोति – छुआछूत, अस्पृश्यता

जगत कउ लागै – संसार के लोगों को लगती है

ता पर तुहीं ढरै – उन पर द्रवित होता है

अध्याय 6- रैदास के पद

नीचहु ऊच करै – नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है

नामदेव – महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध संत, इन्होंने मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में रचना की है

तिलोचनु (त्रिलोचन) – एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य, जो ज्ञानदेव और नामदेव के गुरु थे

सधना – एक उच्च कोटि के संत जो नामदेव के समकालीन माने जाते हैं

सैनु – ये भी एक प्रसिद्ध संत हैं, आदि 'गुरुग्रंथ साहब' में संगृहीत पद के आधार पर इन्हें रामानंद का समकालीन माना जाता है

हरिजीउ – हरि जी से

सभै सरै – सब कुछ संभव हो जाता है

व्याख्या – इस पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं। कवि कहते हैं कि हे! मेरे स्वामी तुझ बिना मेरा कौन है अर्थात् कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बढ़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान् की इच्छा के बिना दुनिया में कोई भी कार्य संभव नहीं है। कवि कहते हैं कि भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं अर्थात् भगवान् मनुष्यों के द्वारा किए गए कर्मों को देखते हैं न कि किसी मनुष्य की जाति को। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे !सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो, उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1 – यदि भगवान चंदन है तो भक्त क्या है?

(ए) पानी

(बी) मोर

(सी) चॉकलेट

(डी) मोर

उत्तर-(ए) पानी

प्रश्न 2 – यदि भगवान भगवान है तो भक्त क्या है?

(ए) पानी

(बी) मोर

(सी) चॉकलेट

(डी) मोर

उत्तर-(बी) मोर

प्रश्न 3 – यदि भगवान चाँद हैं तो भक्त क्या हैं?

- (ए) पानी
- (बी) मोर
- (सी) चॉकलेट
- (डी) मोर

उत्तर-(सी) चॉकलेट

प्रश्न 4 – यदि भगवान दीपक है तो भक्त क्या है?

- (ए) पानी
- (बी) मोर
- (सी) चॉकलेट
- (डी) मोर

उत्तर-(डी) मोर

प्रश्न 5 – यदि भगवान मोती है तो भक्त क्या है?

- (ए) पानी
- (बी) मोर
- (सी) धुआं
- (डी) मोर

उत्तर-(सी) धुआं

प्रश्न 6 – यदि भगवान स्वामी है तो भक्त क्या है?

- (ए) दास
- (बी) मोर
- (सी) चकोर
- (डी) फूल

उत्तर-(ए) दास

प्रश्न 7 – भगवान के आभूषण पर क्या शोभा दे रही है?

- (ए) पानी
- (बी) पंख
- (सी) पंख
- (डी) पंख

उत्तर-(बी) पंख

प्रश्न 8 – भगवान किसका कल्याण बिना भेदभाव के करते हैं?

- (ए) अमीरों का
- (बी) अमीरों का
- (सी) अमीरों का
- (डी) इनसे किसी का नहीं

उत्तर-(सी) अमीरों का

प्रश्न 9 – कवि किसे अपनी पत्नी चाहिए?

- (ए) भगवान को
- (बी) संतों को
- (सी) वास्तुशिल्प को
- (डी) भक्तों को

उत्तर-(ए) भगवान को

प्रश्न 10 – दूसरे पद में कवि ने किसका गुणगान किया है?

- (ए) भगवान
- (बी) साधु
- (सी) साधु
- (डी) भक्त

उत्तर-(ए) भगवान

सारांश

कवि परिचय

कवि – रैदास

जन्म – 1388

रैदास के पद पाठ प्रवेश

यहाँ रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' में कवि अपने आराध्य को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करता है। पहले पद में कवि ने भगवान् की तुलना चंदन, बादल, चाँद, मोती, दीपक से और भक्त की तुलना पानी, मोर, चकोर, धागा, बाती से की है।

उसका प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं विराजता अर्थात् कवि कहता है कि उनके आराध्य प्रभु किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं रहता बल्कि कवि का प्रभु अपने अंतः में सदा विद्यमान रहता है।

यही नहीं, कवि का आराध्य प्रभु हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है। इसीलिए तो कवि को उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है।

दूसरे पद में भगवान की अपार उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन है। रैदास कहते हैं कि भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे निम्न कुल के भक्तों को भी सहज-भाव से अपनाया है और उन्हें लोक में सम्माननीय स्थान दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान् ने कभी किसी के साथ कोई भेद-भाव नहीं किया। दूसरे पद में कवि ने भगवान को गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाला कहा है। रैदास ने अपने स्वामी को गुसईआ (गोसाई) और गरीब निवाजु (गरीबों का उद्धार करने वाला) पुकारा है।

रैदास के पद

रैदास के पद पाठ सार

- यहाँ पर रैदास के दो पद लिए गए हैं। पहले पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भक्त पर अपने आराध्य की भक्ति का रंग पूरी तरह से चढ़ जाता है कवि के कहने का अभिप्राय है कि एक बार जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान् की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है। कवि कहता है कि यदि प्रभु चंदन है तो भक्त पानी है।
- जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूँद-बूँद में समा जाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है। यदि प्रभु बादल है तो भक्त मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है। यदि प्रभु चाँद है तो भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलकों को झपकाए चाँद को देखता रहता है।

अध्याय 6- रैदास के पद

यदि प्रभु दीपक है तो भक्त उसकी बत्ती की तरह है जो दिन रात रोशनी देती रहती है। कवि भगवान् से कहता है कि हे प्रभु यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियाँ पिरोई जाती हैं। उसका असर ऐसा होता है। यदि प्रभु स्वामी है तो कवि दास यानि नौकर है। दूसरे पद में कवि भगवान की महिमा का बखान कर रहे हैं।

कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं। कवि भगवान की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि भगवान गरीबों और दीन-दुःखियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बढ़ा रहा है। कवि कहते हैं कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है।

भगवान के छूने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं। कवि उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सैनु जैसे संतों का उद्धार किया था वही बाकी लोगों का भी उद्धार करेंगे। कवि कहते हैं कि हे सज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है।